हिंदी विवेक

WE WORK FOR A BETTER WORLD

Issue : 01 -07 March 2026


# समरसता उत्साह और रंग का उत्सव

Vipin Aggarwal™
THE SAFFRON EXPERT

# केसर तिलक-एक अज्ञात रहस्य

## केसर तिलक

केसर तिलक आध्यात्मिकता, परम्परा और स्वास्थ्य का एक सुंदर मिश्रण है। यह शुद्ध और पवित्र गंगाजल के साथ शुद्ध केसर से बना है। तिलक आंतरित ऊर्जा को जाग्रत करने, मन की रक्षा करने, स्वास्थ्य को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक के प्रतीक के रूप में लगाया जाता है।

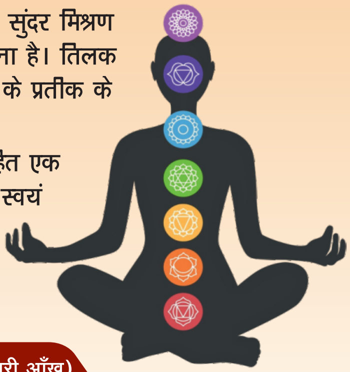

माथे, गले और नाभि पर केसर तिलक लगाना आयुर्वेद और आध्यात्मिक परम्पराओं में निहित एक प्राचीन प्रथा है। प्रत्येक बिंदू को शरीर में एक शक्तिशाली ऊर्जा केंद्र माना जाता है और केसर स्वयं औषधीय और आध्यात्मिक महत्व रखता है। प्रत्येक क्षेत्र के लाभ इस प्रकार हैं-

## केसर तिलक के अद्भुत लाभ

1. माथा आज्ञा चक्र (तीसरी आँख)
- अंतर्ज्ञान, एकाग्रता और बुद्धि का केंद्र
- ऊर्जा को संतुलित करता है और ध्यान शक्ति बढ़ाता है

2. कान
- सतर्कता, जागरुकता और ग्रहणशीलता का प्रतीक
- कानों के पास केसर तिलक लगाने से श्रवण-एकाग्रता और संतुलन बढ़ता है

3. कंठ-विशुद्धि चक्र
- संवाद कौशल्य, आत्मविश्वास और स्व-अभिव्यक्ति को बढ़ाता है
- स्पष्ट संवाद, आंतरिक सत्य और आत्मविश्वास को सशक्त करता है

4. नाभि
- नाभि को शरीर का ऊर्जा केंद्र माना जाता है
- यहाँ केसर तिलक लगाने से शरीर को पोषिण मिलता है, पचनशक्ति बढ़ाता है और आंतरिक अंगों की रक्षा होती है

ज्योतिष के अनुसार, केसर तिलक बृहस्पति (ज्ञान, धन, आध्यात्मिकता), बुध (बुद्धि, वित्त, संचार), केतु (बोध, अंतर्ज्ञान, शांति) और मंगल (साहस, शक्ति) की ऊर्जा को संतुलित करता है। प्रसिद्ध लाल किताब में केसर और केसर तिलक से संबंधित अनेक उपाय बताए गए हैं।

लगातार तीन से छह महीनों तक केसर तिलक लगाने से जीवन के हर क्षेत्र में सकारात्मक परिवर्तन दिखाई देते हैं और यह समृद्धि की सिद्ध कुंजी है। केसर तिलक से अपने दिन की शुरुआत करें।

**GROCERIES IMPEX : +91-9999092561, 9650635204 | vipin@groceriesimpex.com**
**Registered Office Address : R-49, Rita Block, Shakarpur, Delhi-110092.**
**Packing Unit : D-94/A, Matiala Extension, Dwarka, New Delhi-110059.**

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| रंगों में रंगी संस्कृति और परम्परा | निशीथ जोशी | 04 |
| 'होली आई रे कन्हाई रंग छलके' | विनोद अनुपम | 06 |
| सामाजिक समरसता का अद्भुत मिलन | परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा' | 08 |
| रंगों में घुले रिश्तों की मिठास | दीपक कुमार द्विवेदी | 11 |
| होली की अनोखी परम्पराएं | स्निग्धा अवतंस | 13 |
| एआई में भविष्य देखता भारत | डॉ. शुभ्रता मिश्रा | 14 |
| चुनौती को हल्के में न लें | प्रवीण सिन्हा | 17 |
| फ्रांस एवं इजरायल के साथ नया मॉडल | ललित गर्ग | 19 |
| विकृत मानसिकता, बिखरते परिवार | मृत्युंजय दीक्षित | 21 |
| डिजिटल पत्रकारिता : चमक और चुनौती | मीनाक्षी दीक्षित | 23 |
| संघ यात्रा को रेखांकित करती 'शतक' | अतुल गंगवार | 26 |
| जैव विविधता: पृथ्वी के जीवन का आधार | सोनम लववंशी | 27 |
| समाचार | हिंदी विवेक | 29 |



UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

**पंजीयन शुल्क**

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप,
चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067, सम्पर्क : 9594991884

होली

# रंगों में रंगी संस्कृति और परम्परा

निशीथ जोशी

**होली वसंतोत्सव से जुड़ा ऐसा पर्व है जो मानव के तन, मन और पर्यावरण से भी जुड़ा है। शीत ऋतु में मानव शरीर के जो रोम कूप बंद हो जाते हैं, अबीर-गुलाल और जल से खुल जाते हैं ताकि ग्रीष्म ऋतु में पसीना निकल सके। होलिका की अग्नि के ताप से शरीर में उत्पन्न हो गए विषाणु भी नष्ट हो जाते हैं।**

होली की स्मृति आते ही भारतीय मन में एक ऊर्जा का संचार होता है और रंग-बिरंगे उल्लासित चेहरे अंतःदृष्टि में घूमने लगते हैं तो होली में ऐसा क्या है जो मन में उमंग की तरंग के साथ ही वातावरण में भी प्रेम और आनंद भर देता है? यह प्रकृति और मानव जीवन से जुड़ा एक ऐसा पर्व है जो वैदिक काल से किसी न किसी रूप में भारत में मनाया जाता है। होली को लेकर कई धार्मिक, सामाजिक मान्यताएं और कथाएं प्रचलित हैं।

एक मान्यता है कि सबसे पहले होली भगवान शिव और पार्वती ने खेली थी। वह फाल्गुन पूर्णिमा का दिन था। तपस्या में लीन शिव समाधि में थे। दैत्य तारकासुर के अत्याचार से तीनों लोक त्राहि त्राहि कर रहे थे। तारकासुर को ब्रह्मा का वरदान था कि उसकी मृत्यु शिव के पुत्र के हाथों होगी। शिव की तपस्या भंग करने के लिए सभी देवताओं ने कामदेव को मनाया। कामदेव अपनी पत्नी रति संग शिव को समाधि से बाहर लाने के लिए नृत्य करने लगे और उनके पुष्प बाण से शिव की तपस्या भंग हुई, जिससे शिव क्रोधित हो उठे। शिव के तीसरे नेत्र की क्रोधाग्नि से कामदेव भस्म हो गए। रति के आग्रह और प्रार्थना के बाद शिवजी ने कामदेव को पुनर्जीवित कर दिया। उसके पश्चात शिव का पार्वती से विवाह हो गया। शिव और पार्वती के तेज से कार्तिकेय का जन्म हुआ तब खुशी में जो आयोजन हुआ उसमें शिव ने डमरू बजाया, विष्णु ने बांसुरी, पार्वती ने वीणा और सरस्वती ने गायन किया, पुष्पों की वर्षा की गई।

दूसरी कथा के अनुसार राजा पृथु पहले चक्रवर्ती सम्राट थे। उन्होंने पृथ्वी को समतल कर खेती योग्य बनाया था। उस समय ढूंढ़ी नामक मायावी राक्षसी ने शिव से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि उसकी मृत्यु मानव, देवता, अस्त्र, शस्त्र, सर्दी, गर्मी या वर्षा से नहीं होगी। शिव ने वरदान देते समय यह जोड़ दिया कि बच्चों के शोर गुल, हो हल्ला और हंसी मजाक के समक्ष वह शक्ति हीन हो जाएगी। उसके पश्चात ढूंढ़ी बच्चों को खाने लगी। उससे बचाव के लिए राजा पृथु ने पुरोहितों

से विचार विमर्श कर बच्चों से लकड़ियां एकत्र कर अग्नि प्रज्ज्वलित करवाई। बच्चों ने अग्नि के चारों ओर नाचते गाते हुए शोर खूब मचाया, तालियां बजाईं और मंत्र पढ़े। इससे शक्तिहीन हुई ढूंढ़ी उस अग्नि में गिर कर भस्म हो गई। इसी खुशी में होली मनाई जाती है।

अन्य कथा राक्षस हिरण्यकश्यपु और विष्णु भक्त प्रहलाद की है। हिरण्यकश्यपु भगवान विष्णु का विरोधी था और स्वयं की पूजा करवाता था। उसने अपने पुत्र प्रहलाद को कई बार मरवाना चाहा, पर वह बार-बार बच गया। हिरण्यकश्यपु की बहन थी होलिका। उसके पास ऐसा वस्त्र था जिसे पहनने पर उस मनुष्य पर अग्नि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। फाल्गुन पूर्णिमा के दिन होलिका प्रहलाद को लेकर लकड़ियों से बनी एक चिता पर बैठ गई और उसमें आग लगा दी गई। तेज पवन के झोंके से वह वस्त्र प्रहलाद पर आ गया और होलिका भस्म हो गई। प्रहलाद के बचने की खुशी में विष्णु भक्त रंग उत्सव के रूप में होली मनाते हैं।

मान्यता है कि द्वापर काल में कृष्ण ने ग्वालबालों के साथ राधा और सखियों के साथ फाल्गुन पूर्णिमा के दिन ही रंगोत्सव मनाया था। कृष्ण का रंग श्यामल और राधा गौर। कृष्ण को मां यशोदा ने रंग लगाने का मार्ग बताया ताकि सभी एक ही रंग में रंग जाएं। उस दिन से ही वृंदावन में अबीर-गुलाल और पुष्पों की होली खेली जाती है।

7वीं शताब्दी में सम्राट हर्ष ने संस्कृत में नाटक लिखा है- रत्नावली जिसमें है उल्लेख है कि नगरवासियों ने लाल सुगंधित रंग, जल और पिचकारी से इतना रंगोत्सव मनाया कि मार्ग भी लाल सुगंधित रंग से भर गए। इन सभी में फाल्गुन पूर्णिमा की तिथि का विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। वैसे वैदिक काल से ही फसल पकने पर काट कर पहला भाग जो 'होला' कहा जाता था, ईश्वर को समर्पित करने की परम्परा चली आ रही है। अग्नि को ईश्वर का मुख माना जाता है इसीलिए फसल पकने पर लकड़ियां एकत्र कर अग्नि प्रज्ज्वलित कर अन्न व अन्य उपज होलिका को समर्पित की जाती है। फिर उत्सव के रूप में नृत्य, गायन, पकवान बना कर सबमें वितरित करने के साथ ही रंग लगाकर सबसे मिलने की पर्व बन गया यह होलिकोत्सव। होली में रंग की परम्परा भी प्राचीन काल से चली आ रही है।

फाल्गुन पूर्णिमा ऋतु परिवर्तन का काल होता है। वसंत ऋतु पूर्ण यौवन पर होती है। प्रकृति पुष्पों से धरा को भर देती है। पुराने पर्ण त्याग कर वृक्ष पल्लवित और पुष्पित हो जाते हैं। इसी समय शीत ऋतु का अवसान और ग्रीष्म का आगमन हो जाता है। ऋतु के प्रभाव से मानव मन भी स्वत: ही उल्लासित, तरंगित और आनंदित होने लगता है। नई उपज आ जाने के कारण भी मानव जीवन में भविष्य के लिए नई आशा का संचार होता है। ऐसे में सामूहिक रूप से उत्सव मना कर प्रकृति और ईश्वर के प्रति सम्मान प्रकट करने का सांस्कृतिक और पारम्परिक पर्व भी है यह होलिकोत्सव।

प्राचीन भारत में होलिकोत्सव में पलाश (टेसू) के पुष्पों को रात भर पानी में डुबो कर रख दिया जाता था। इसके केसरिया रंग का पानी होला खेलने वाले एक-दूसरे पर डालते थे। पीले रंग के लिए हल्दी और सुगंध के लिए चंदन का टीका लगाया जाता था। अन्य रंगों को भी प्रकृति और पुष्पों से ही बनाया जाता था।

वृंदावन में आज भी गेंदा और गुलाब के पुष्पों से होली खेली जाती है। उत्तराखंड में तो पूरे फाल्गुन महीने को आज भी उत्सव के रूप में मनाया जाता है। होलियारों (होली के गीत गाने और नृत्य करने वाली टोली) घर-घर जाकर सबको साथ लेकर उत्सव मनाती है। कुमाऊं अंचल में खड़ी होली और बैठी होली की परम्परा है। जिसमें रागों का गायन, नृत्य और फिर पकवानों का वितरण सांस्कृतिक और सामाजिक ताने बाने को और अधिक मजबूत करने में ऊपयोगी है।

होली का काशी में विशेष महत्व है। मान्यता है कि एकादशी के दिन पार्वती का गौना हुआ था। काशी विश्वनाथ मंदिर में रंग एकादशी (आमलकी एकादशी) के दिन शिव को पालकी में रखकर परिक्रमा की जाती है। अबीर-गुलाल में सूखे रगों की होली होती है। यह काशी में होली की शुरुआत होती है। इसके अगले दिन मणिकर्णिका घाट पर मसाने की होली होती है। जिसमें जला दिए गए शवों की राख से होली खेली जाती है। उधर पंजाब के आनंदपुर स्थित तख्त श्री केशगढ़ साहिब में होला मोहल्ला का आयोजन होली के दूसरे दिन होता है। श्री गुरु गोविंद सिंह ने 1701 में इसकी शुरुआत की थी। होला (हमला) मोहल्ला (समूह)। इसमें निहंग और सिख अपनी वीरता, मार्शल आर्ट, तलवारबाजी, गतका, भाला फेंक, घुड़सवारी के माध्यम से एकता, निडरता और आध्यात्मिकता का संदेश देते हैं। ■■■

**होली के पारम्परिक गीतों को बड़े पर्दे ने सम्भाल कर रखा है। कई ऐसे लोकगीत हैं जिसे बड़े पर्दे पर फिल्माया गया है, जो आज भी होली के त्यौहार पर सुनाई देते हैं और लोगों के कदम गाने की धुन पर मस्ती व उल्लास में थिरक उठते हैं।**

# 'होली आई रे कन्हाई रंग छलके'

कभी समय था जब परदे पर होली को एक अनिवार्य आकर्षण के रुप में समाहित किया जाता था। यह वह समय था जब हिंदी फिल्में, हिंदी दर्शकों को ध्यान में रख कर बना करती थी। उस समय 'होली आई रे', 'होली' 'फागुन' जैसी कई फिल्में बनीं जिसमें सारा कथानक होली के आसपास ही घूमता था।

यह वह समय था जब हिंदी सिनेमा के लिए होली वर्जनामुक्त होने का एकमात्र बहाना था। यह सिर्फ रंग और उत्साह का अवसर नहीं था, मानव मुक्ति का अवसर था जिसमें मन की कुंठाओं, आग्रहों और पूर्वाग्रहों से मुक्ति पाई जाती थी। कई श्वेत श्याम फिल्मों में होली दृश्य पूरी जीवंतता से फिल्माए गए, लेकिन 1950 में बनी 'जोगन' के 'डारो रे रंग डारो रसिया' को आज भी भुलाना सम्भव नहीं हो पाता। इस गीत में दिखती नरगिस की जीवंतता फिर एक बार देखने को मिली महबूब खान की 'मदर इंडिया' में। गांव की अलमस्ती, छेड़छाड़ और सम्बंधों की गर्माहट प्रदर्शित करती 'होली आई रे कन्हाई रंग छलके, सुना दे जरा बांसुरी....' आज भी होली के उत्साह से सराबोर कर जाती है।

अधिकांश हिंदी फिल्मों में होली के अवसर का उपयोग कथानक को एक नया मोड़ देने के लिए ही किया गया है। राजेश खन्ना अभिनीत 'कटी पतंग' की, 'आज न छोड़ेंगे हमजोली....' की गति होली के मूड को दुगना ही नहीं करती, इस गीत में अभिव्यक्त एक युवा विधवा के दर्द का कंट्रास्ट इसे और भी प्रासंगिक बना देता है। कई फिल्मों में होली का अवसर प्रेम की मुखर अभिव्यक्ति के रूप में भी प्रदर्शित हुआ है। राकेश रोशन की 'कामचोर' में नायिका, 'जहां मल दे गुलाल मोहे ....' की मांग करती है, वही 'डर' में नायिका अज्ञात प्रेमी के भय से मुक्त होने का उत्साह अपने पति के साथ इन शब्दों के साथ मनाती है, 'अंग से अंग मिलाना सजन ऐसे रंग लगाना...'।

विनोद अनुपम

लम्बे अंतराल के बाद आए 'बागबान' के गीत 'होली खेले रघुवीरा..' के अतिरिक्त होली गीतों के नाम पर हिंदी सिनेमा में सन्नाटा ही दिखाई पड़ता है। 'बागबान' की होली भी इसलिए दर्शकों को स्वीकार्य हो गई क्योंकि यह एक परिवार की कहानी थी। सबसे बढ़ कर इसमें परम्परागत लोकगीतों की सोंधी महक थी, जो होली के वातावरण को आज भी पूर्णता देते लगते हैं।

भारतीय लोकगीतों का अपना एक समय काल अनुशासन है, होली पर गाए जाने वाले फाग या फगुआ की शुरुआत वसंत पंचमी से होती है और होली तक चलती है। होली के अगले ही दिन याने चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से चैता का गायन शुरु हो जाता है। ढोल मजीरे वही रहते हैं, लोग वही रहते हैं, स्थान भी वही रहता है, लेकिन तिथि बदलते ही गीत बदल जाते, संगीत और सुर बदल जाता, यह है भारत का लोक संगीत। यह कतई संयोग नहीं कि हिंदी सिनेमा के कालजयी होली गीतों को याद करने का प्रयास करें तो अधिकांश उसमें होली के पारम्परिक गीतों से लिए गए हैं, जिसमें 'बागबान' से पहले

‘सिलसिला’ का रंग बरसे..., शामिल है। वर्षों से लोकगीत के रूप में गाए जाने वाले, रंग बरसे.... का विकल्प नहीं ढूंढा जा सकता। होली और होली गीत के बहाने ही किसी व्यक्ति को अपने प्रेम की सार्वजनिक अभिव्यक्ति की ताकत दे सकता है। विशेषकर तब जब वह सामाजिक दायरे से बाहर भी हो।

पारम्परिक लोकधुनों पर ‘गोदान’ में अपनी तरह का एक अद्भुत होली गीत रचा है पंडित रविशंकर ने। हिंदी सिनेमा में होली गीत तो आते रहे, उनमें रंग और उत्साह भी दिखता रहा, लेकिन एक जो गांवों की भदेस अनगढ़ होली होती है, उसे दिखाने से सिनेमा संकोच करती रही। यहां वही अनगढ़ता कमाल करती है, गांव के लड़के जमा होते हैं और होली की लोकप्रिय धुन ‘जोगिरा सा रा रा’ पर झूमना शुरु करते हैं। लगभग एक मिनट लम्बे प्रील्यूड में लोकसंगीत को लोक वाद्यों के साथ जिस तरह रविशंकर रचते हैं, देशज होली का वातावरण स्थापित हो जाता है। यह कदाचित् होली का एकमात्र गीत होगा जिसमें कोई महिला नहीं दिखी होगी, न ही कहीं एक स्थान पर होली खेलते लोगों का कृत्रिम समूह दिखता। होली खेलत नंद लाल, बृज में होली खेलत नंदलाल... ढोल मजीरे के साथ गाते हुए लड़के गांव की गलियों में घूम रहे और जो मिल रहा रंगों से उसे नहला रहे। फिल्म भले ही श्वेत श्याम है, लेकिन होली के रंग में सराबोर होने से हम नहीं बच सकते।

सच यही है कि अधिकांश फिल्मों में होली सौंदर्य, सामाजिकता और संगीत का समन्वय ही प्रदर्शित करती आई है, वास्तव में जिसे भुलाना सम्भव नहीं। वी. शांताराम ने भी अपनी पहली रंगीन फिल्म ‘नवरंग’ में एक अद्भुत होली गीत रखा था, जिसे नृत्यांग्ना संध्या की चपलता ने अविस्मरणीय बना दिया। छेड़छाड़ के साथ कुछ यूं शुरु होते हैं गीत के बोल, कटक अटक झटपट पनघट पर चटक मटक झनकार नवेली ... और फिर प्रत्युत्तर शुरु होता है, जारे हट नटखट...। विदित हो कि इस गीत में नायक-नायिका दोनों की ही भूमिका अकेले संध्या ने ही निभाई थीं।

यहां ‘नदिया के पार’ को कैसे भूला जा सकता है, जोगिडा सारारारा... भोजपुरी पृष्ठभूमि वाले इस गाने ने नायक-नायिका ही नहीं पूरा गांव रंगों में सराबोर दिखता है। बूढ़े से लेकर बच्चे तक। होली के अवसर पर पारम्परिक नटुआ नाच की झलक भी कदाचित् यहां पहली बार हिंदी फिल्म में दिखी थी।

होली की विशेषता ही है जितने रंग हैं, उतने ही मूड हैं, लेकिन यह भी सच है होली का वही मूड लोगों की स्मृतियों में घर कर पाता है जो परम्परा में सदियों से चली आ रही है। ■■■

# सामाजिक समरसता का अद्भुत मिलन

**होली का त्यौहार सामाजिक समरसता का संदेश देता है। कई जगहों पर होली मिलन समारोह आयोजित किए जाते हैं। जिसमें हर वर्ग के लोग शामिल होते हैं, न कोई भेदभाव, न कोई वैमनस्यता।**

होली शब्द सुनते ही आंखों के सामने वो रंगों से सराबोर मनोरम दृश्य उपस्थित हो जाते हैं जिसमें मौज-मस्ती की आवाजें कानों में गूंजने लगती हैं। होली से सम्बंधित कई पौराणिक कथाएं भी जुड़ी हैं और होली जलाने की परम्परा भी सदियों से चल रही हैं। होली की परियोजनाएं हफ्ते दो हफ्ते पहले से बननी शुरू हो जाती  हैं। होली पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर समरसता का त्योहार है और इस त्योहार की रूपरेखा ही ऐसी है कि इसमें जात-पात, ऊंच-नीच का कोई भेद नहीं होता है। होली की तैयारी सभी अपने सामर्थ्य के अनुसार करते हैं। जिस घर में नई शादी हुई हो तो वहां की होली में अलग हो रौनक होती है।

नई भाभी और नए जंवाई (दामाद) सदैव से होली में विशिष्ट स्थान पाते हैं और उनके साथ तो रंगों का ही खेल होता है। प्राचीन समय में होली में प्राकृतिक रंगों का मसलन टेसू के फूलों से बने रंग, हल्दी, नील का प्रयोग होता था। यह रंग त्वचा पर कोई दुष्प्रभाव भी नहीं छोड़ते थे। इसके अलावा मिट्टी व कीचड़ से भी खूब होली खेली जाती थी जिससे आप मिट्टी की गुणवत्ता का लाभ भी पाते थे। आजकल बहुतायत में तो कृत्रिम रंग व अबीर का प्रयोग होता है, लेकिन जब से लोग प्रकृति से वापस जुड़ने लगे हैं तो ऑरगेनिक रंग व अबीर का भी चलन हो गया है। समय के साथ कई तरह की पिचकारियां बाजार में आ गई हैं जिसमें आधुनिकता का रंग भी चढ़ा हुआ है और रंग डालने का ढंग भी परिष्कृत हो गया है। होली पर शहर में पढ़ने और रहने वाले बच्चे भी गांव-घर लौट आते हैं। होली में नए वस्त्र भी सदैव प्रासंगिक रहे हैं और विशेषकर पुरुषों के सफेद कुर्ते व पायजामें सबसे ज्यादा पहने जाते हैं, जिस पर हर रंग घुल कर एक नया रंग बना देते हैं। महिलाएं या युवतियां भी अधिकतर सफेद साड़ी या सलवार कुर्ती में दिखाई देती हैं। होली के रंग सभी को एक ही रंग

परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'

में रंग देते हैं, जिससे भिन्नता समाप्त हो जाती है और ऊंच-नीच, अमीर-गरीब सभी एक हो जाते हैं। आजकल राजनीतिक पार्टी भी होली मिलन समारोह आयोजित करवाते हैं। जिससे वे आम लोगों से मेल-जोल बढ़ाते हैं, इस तरह त्योहार से धार्मिक सौहार्द भी बढ़ता है। कई जगहों पर लोग एकजुट होकर होली मिलन समारोह का आयोजन करते हैं। जिसमें एकसाथ मिलकर लोग कार्यक्रम का आनंद लेते हैं, भोजन का आनंद लेते है और आपसी सौहार्द व सामाजिक समरसता का संदेश दुहराते हैं। ऐसे आयोजनों पर वर्षो से हास्य-कवि सम्मेलन का भी आयोजन होता है और खूब हंसी-ठिठोली आनंद का वातावरण बन जाता है। घर के बड़े-बुर्जुग के पैरों पर अबीर डालने की भी पुरानी परम्परा है और आस-पड़ोस के लोग एक-दूसरे से सारी वैमन्स्यता व भेदभाव समाप्त कर गले मिलते हैं।

होली इन दिनों इवेंट प्लानर के द्वारा भी आयोजित की जा रही है। जिसमें आकर्षक फव्वारे, रंग-बिरंगी टोपियां, फूलों व पंखुरियों से भी होली खेली जा रही है। आधुनिकता के रंग में रंग कर भी होली उतनी ही उत्साहवर्धक है और आपसी मतभेद भूला कर एक-दूसरे से मिलने का एक विशेष त्योहार भी है। होली ने हमारी संस्कृति और हमारी परम्परा को स्थाई रखा है।

वैसे, समय के साथ होली का विकृत रूप भी सामने आया है। होली के बहाने कई लोग अश्लील गाने बजाते हैं और शराब का सेवन कर त्योहार के नाम पर ओछी हरकतें भी करते हैं, जो होली के रंग में भंग डालती है। होली बुराई पर अच्छाई की जीत है और इसकी मूल भावना में शुद्धता और सौम्यता होनी चाहिए।

होली में बनने वाले पकवानों का भी बहुत महत्व है। कुछ राज्यों में जैसे उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र इत्यादि में गुजिया, नमकीन, मठरियां बनाई जाती हैं तो बिहार, झारखंड, बंगाल में मालपुए, दहीबड़े, पकौड़ियों का खूब चलन है। वैसे, होली पर बनाए जाने वाले व्यंजनों में विविधता दिखाई देती है। होली के रंग के बाद लोग एक-दूसरे के घर जाकर तरह-तरह के व्यंजन का आनंद लेते हैं और प्रेम व आत्मीयता से गले मिलते हैं जो सामाजिक समरसता को दर्शाते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि होली सामूहिक तौर पर मनाया जाने वाला सबसे बड़ा त्योहार है और इससे आपस में जुड़ने की भावना प्रबल होती है। विदेशों में भी बसे भारतीय बड़े स्तर पर होली पार्टी का आयोजन करते है और अपनी भारतीय संस्कृति को जीते हैं।

■■■


# स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

## इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

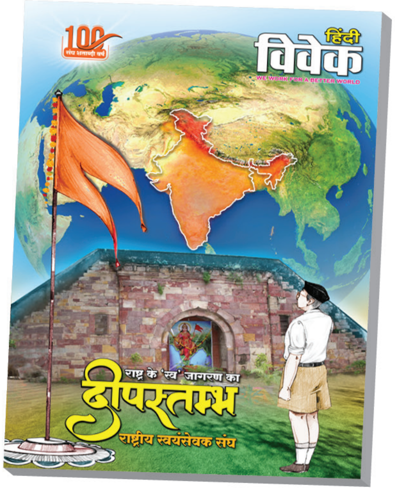


ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

**Bank Details :** State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

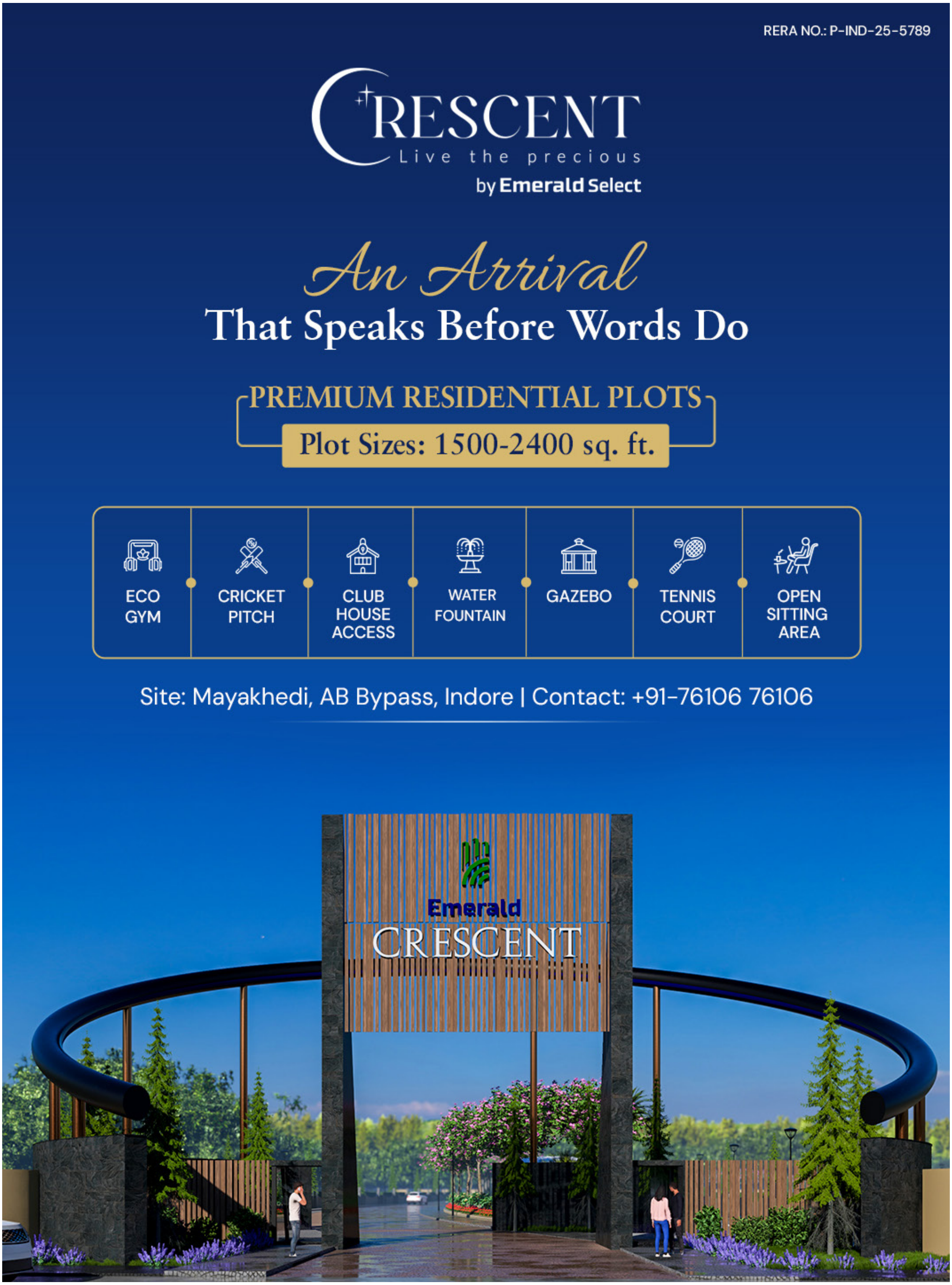
RERA NO.: P-IND-25-5789
CRESCENT
Live the precious
by Emerald Select
An Arrival
That Speaks Before Words Do
PREMIUM RESIDENTIAL PLOTS
Plot Sizes: 1500-2400 sq. ft.
ECO GYM
CRICKET PITCH
CLUB HOUSE ACCESS
WATER FOUNTAIN
GAZEBO
TENNIS COURT
OPEN SITTING AREA
Site: Mayakhedi, AB Bypass, Indore | Contact: +91-76106 76106
Emerald
CRESCENT

दीपक कुमार द्विवेदी

**होली के पांच दिन बाद रंगपंचमी का त्यौहार मनाया जाता है। बच्चे हों या युवा या फिर वृद्ध मस्ती में डूबे-डूबे दिखाई देते हैं। रंगों की झोली लिए मस्तानों की टोली हर जगह दिखाई पड़ती हैं। चारों ओर रंग व गुलाल के उड़ने से पूरा वातावरण रंगीन दिखाई देता है।**

रंग पंचमी को यदि केवल होली का विस्तार समझ लिया जाए तो उसके अर्थ को छोटा कर देंगे। होली में रंग के साथ गुलाल भी उड़ते हैं, लोग खुलकर होली खेलते हैं। रंग पंचमी में वही रंग जैसे ठहरते हैं। लोक में इसे देव पंचमी कहा जाता है। मान्यता है कि त्रेतायुग के प्रारम्भ में भगवान विष्णु ने रंगों से ब्रह्मांड को भर दिया। आगे चलकर वामन, परशुराम और राम के रूप में अवतार लिया। इस कथा को यदि प्रतीक की तरह देखें तो उसका आशय स्पष्ट है सृष्टि स्वयं रंगों से भरी है और मनुष्य उसी सृष्टि का अंश है। गांव के लोग इतना ही कहते हैं होलिका में जो मन में जमा है, उसे जला दो। खटास हो, गुस्सा हो, मन का बोझ हो आग में छोड़ आओ। पांच दिन बाद जब रंग पंचमी आती है तो जैसे मन को खाली जगह में रंग भरने का अवसर मिल जाता है। जब किसी के चेहरे पर गुलाल लगाते हैं तो बात केवल रंग की नहीं होती हाथ उसकी ओर बढ़ते हैं तो सामने वाला भी मुस्कुरा देता है। साल भर की औपचारिकता उस एक पल में थोड़ी ढीली पड़ जाती है। जो आदमी दूर-दूर रहता है, वह भी उस दिन पास आ जाता है।

कई घरों में उस सुबह हल्दी डालकर नहा लेते हैं। कोई गंगाजल छिड़क देता है। आंगन में छोटा-सा दीप जला लिया। कोई बड़ी तैयारी नहीं, बस मन में यही कि घर में सभी लोग ठीक रहें, सब स्वस्थ रहें।

मालवा में रंग पंचमी अलग ही दिखती है। सुबह से ही शहर का रंग बदलने लगता है। लोग सफेद कपड़े पहनकर निकलते हैं, जानते हुए कि थोड़ी देर में सब रंग जाएंगे। ढोल की आवाज पास आती है और लोगों के कदम रुकते नहीं बल्कि उनकी थाप पर थिरकने लगते हैं।

इंदौर की सड़कों पर तो रंगपंचमी के दिन बस भीड़ चलती रहती है। एक टोली आती है, दूसरी जुड़ जाती है, गुलाल उड़ता है। फिर फायर ब्रिगेड की गाड़ी से रंग मिला पानी ऊपर से गिरता है।

# रंगों में घुले रिश्तों की मिठास

एक पल के लिए सब कुछ धुंधला हो जाता है। जब आंख खुलती है तो सामने वाले का चेहरा पहचान में आए या न आए, उसकी हंसी पहचान में आ जाती है। दुकानदार भी भीग रहा है, ग्राहक भी। कोई हिसाब नहीं, बस चारों ओर रंग ही रंग।

महाराष्ट्र में रंग पंचमी का होली के बाद पांच दिन तक हल्का-सा रंग बना रहता है। पहले सूखा गुलाल, फिर पानी। घरों में पूरणपोली बनती है। लोग बैठते हैं, खाते हैं, आनंद मनाते हैं।

इसी बीच कई घरों में शादी की बात भी शुरू हो जाती है। सब बैठे हैं, वातावरण हल्का है, बात निकल आती है- कोई कह देता है तिथि देख लें और बात आगे बढ़ जाती है, बस इतना ही। रंग है, लोग हैं और रंगपंचमी के दिन बाकी दिनों से अलग होते हैं।

पुष्टिमार्ग में रंग पंचमी का एक अलग स्वरूप है। जो आम तौर पर होली के पांच दिन बाद आती है, ब्रज की रासलीला और भक्तिपूर्ण वातावरण से ओतप्रोत एक विशेष उत्सव है। इसे 'देव पंचमी' के रूप में भी जाना जाता है, जहां ठाकुरजी (श्री कृष्ण) के साथ विशेष रूप से सूखा गुलाल खेला जाता है। श्रीनाथजी के साथ रंगार्चन, पिचवाइयों की सजावट यह दिखाता है कि रंग यहां भक्ति का अंग हैं। गोकुलनाथजी की कथा यह सिखाती है कि तिथि से अधिक भावना महत्वपूर्ण है।

रंग पंचमी का एक आर्थिक पक्ष भी है। रंग बनाने वाले कारीगर, फूल बेचने वाले, मिठाई वाले, ढोलक बजाने वाले इन सबकी आजीविका इन पर्वों से जुड़ी है। छोटे शहरों और कस्बों में यह दिन बाजार को जीवंत कर देता है।

हमारी परम्परा सृष्टि को त्रिगुणात्मक मानती है सत्व, रज और तम। जीवन इन्हीं के बीच संतुलन है। हमारे पर्व उसी संतुलन का अभ्यास हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पुरुषार्थ जीवन के चार आयाम हैं। धर्म दिशा देता है, अर्थ स्थिरता देता है, काम आनंद देता है और मोक्ष अंततः शांति देता है। रंग पंचमी हमें याद दिलाती है कि यदि रंग केवल चेहरे पर रह जाएं और मन में कटुता रह जाए तो उत्सव अधूरा है। यदि रंग के साथ हंसी भी रह जाए, अपनापन भी रह जाए तो वही सच्चा उत्सव है। हमने कई बार इस दिन को केवल रंगों का खेल समझ लिया, पर यदि थोड़ा ठहरकर देखें तो यह दिन हमें अपने भीतर झांकने का अवसर देता है- क्या हम सचमुच मन से हल्के हैं? क्या हम मतभेद को मनभेद नहीं बनने देते?

रंग धुल जाएंगे। कपड़े बदल जाएंगे, पर यदि उस दिन की स्मृति में एक मिठास रह जाए तो समझिए रंग पंचमी सफल हुई। यही उसका सार है, सृष्टि के रंगों को अपने मन तक पहुंचाना। यही हमारी सनातन परम्परा की पहचान है- रूप अनेक, पर जीवन एक।

■■■

# होली की अनोखी परम्पराएं

भारत में सारे त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाएं जाते हैं जिनमें होली भी एक है। भारत के राज्यों में होली मनाने की परम्परा भी अजब-गजब है तो चलिए कौन से राज्य में किस तरह की होली मनाई जाती है, डालते हैं इस पर एक दृष्टि।

**पंजाब-** वैसे देखा जाए तो हर राज्यों में देवर-भाभी की अनोखी होली होती है। इन रिश्तों में मिठास बनी रहे, ऐसे में हंसी-ठिठोली के बीच होली की यह परम्परा सभी जगह देखने को मिलती है, लेकिन क्या आपने कभी सुना है कि रंग लगाने के बाद भाभी देवर पर कोड़े बरसाती है। जी हां! चौकिएं नहीं ये सच्चाई है।

पंजाब से सटे श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में कोड़ामार होली की परम्परा है। होली मनाने के इस विशेष अंदाज में यहां देवर-भाभी के बीच कोड़े वाली होली काफी चर्चित है। होली पर देवर-भाभी को रंगने का प्रयास करते हैं और भाभी-देवर की पीठ पर कोड़े मारती है। इस अवसर पर देवर-भाभी से नेग भी मांगते हैं।

**राजस्थान-** राजस्थान में भी होली की ऐसी परम्परा है कि आप दांतों तले ऊंगली दबा लेंगे। जी हां! राजस्थान के भीलवाड़ा में जिंदा व्यक्ति को मुर्दा बनाकर उसकी शव यात्रा निकालते हैं और होली मनाई जाती है। किसी युवक को अर्थी पर लेटाया जाता है और फिर गाजे-बाजे के साथ रंग-गुलाल उड़ाते हुए पूरे शहर में उसकी शव यात्रा निकाली जाती है। प्रतीक के तौर पर अर्थी संस्कार भी किया जाता है, लेकिन उससे पहले अर्थी पर लेटा युवक भाग जाता है। ये परम्परा अपने अंदर छिपी बुराइयों और भड़ास को बाहर निकालती है और फिर नई शुरुआत करने के तौर पर निभाई जाती है।

स्निग्धा अवतंस

**मध्य प्रदेश-** क्या आपने कभी सुना है कि होली में अंगारों पर चलने की भी परम्परा है। मध्य प्रदेश के झाबुआ, उन्हेल और आसपास के गांव में होलिक दहन के बाद अंगारों पर चलने की परम्परा निभाई जाती है। इसी तरह राजस्थान के डूंगरपुर में भी दहकते आंगारों पर चलकर ये अनूठी परम्परा निभाते हैं। मान्यता है इससे विपदा नहीं आती।

**आंध्र प्रदेश-** आंध्र प्रदेश के कुरनूल जिले के संथेकुडलूर गांव में होली पर पुरुष के साड़ी और गहने पहनने की अनोखी परम्परा है। यह रस्म रति-कामदेव की पूजा के लिए की जाती है, जिसमें पुरुष भगवान को प्रसन्न करने के लिए महिलाओं के कपड़े धारण करते हैं।

**हिमाचल प्रदेश-** हिमाचल पेदेश के मंडी में होली पर मिठाई के अलावा बहन और बेटी के घर स्पेशल तरह की रोटियां भेजी जाती हैं। इन रोटियों में केसर, पिस्ता, अखरोट का भी प्रयोग किया जाता है। इस परम्परा के पीछे मान्यता यह है कि जमीन में उगी फसल का भाग बेटियों को भेजने से मायके और ससुराल दोनों में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

**प्रयागराज-** प्रयागराज में होलिका दहन से एक दिन पहले शहर की सड़कों पर हथौड़े की बारात निकाली जाती है। इस हथौड़े को दूल्हे के रूप में पूजा जाता है, फिर इससे कद्दू को तोड़ा जाता है। इसे कद्दू भंजन कहते हैं। इस परम्परा को बुराई और नकारात्मकता पर सफलता के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। ■■■

# एआई में भविष्य देखता भारत

सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय
welfare of all, happiness of all

**इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 ने वैश्विक पटल पर एक ऐसी रेखा खींच दी है, जो आने वाले दशकों तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता के मानवीय और सकारात्मक उपयोग की दिशा में मार्गदर्शन करती रहेगी।**

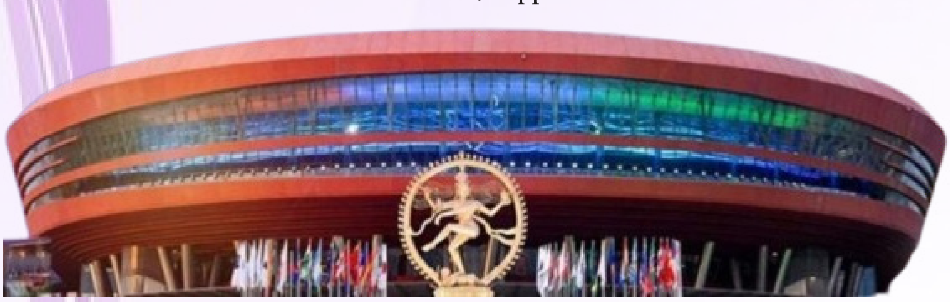

डॉ. शुभ्रता मिश्रा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की दुनिया में अब तक का सबसे बड़ा और प्रभावशाली आयोजन, इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026, 16 से 21 फरवरी 2026 तक नई दिल्ली के भव्य 'भारत मंडपम' में सम्पन्न हुआ। विश्वभर से 3 लाख से अधिक रजिस्ट्रेशन, 100 से अधिक देशों के प्रतिनिधि, 20 से अधिक राष्ट्राध्यक्ष, 40 से ज्यादा ग्लोबल सीईओ और तकनीकी जगत के महारथियों की उपस्थिति ने इसे ऐतिहासिक बना दिया। भारत ने अपनी युवा शक्ति, तकनीकी प्रतिभा और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के साथ इस सम्मेलन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता को लेकर वैश्विक विमर्श को एक नई ऊंचाई प्रदान की। यह केवल एक तकनीकी सम्मेलन नहीं बल्कि मानव सभ्यता के भविष्य की दिशा तय करने वाला उत्सव सिद्ध हुआ है।

16 फरवरी की सुबह जब प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया तो 30 देशों के 300 से अधिक तकनीकी प्रदर्शक अपने-अपने नवाचारों के साथ सुसज्जित खड़े थे। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और सतत उद्योग से जुड़े एआई समाधान रंगीन मंडपों में सजे हुए थे। युवा प्रतिभाओं की भीड़, चमकते स्क्रीन और रोबोटिक प्रदर्शन मानो एआई के भविष्य की झलक दिखा रहे थे। सम्मेलन साक्षी बना कि कैसे भारत ने एआई की दिशा पूरी तरह बदल दी क्योंकि पिछले वैश्विक सम्मेलनों ब्रिटेन के ब्लेचली पार्क एआई सेफ्टी समिट (2023), सियोल एआई समिट (2024) और पेरिस एआई एक्शन समिट (2025) के बाद यह ऐसा चौथा वैश्विक एआई शिखर सम्मेलन था जिसकी मेजबानी पहली बार किसी ग्लोबल साउथ यानी विकासशील देश ने की।

प्रधान मंत्री मोदी ने एआई को मानव सभ्यता का निर्णायक मोड़ बताते हुए कहा कि जैसे लेखन और वायरलेस संचार ने सभ्यता को नया आयाम दिया, वैसे ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता भी एक परिवर्तनकारी शक्ति है। उन्होंने भारत के मानव-केंद्रित दृष्टिकोण को सामने रखा कि एआई प्रशासन नैतिकता, जवाबदेही, सम्प्रभुता, समावेशन और वैधता पर आधारित होना चाहिए। एआई का अंतिम लक्ष्य मानवता की सेवा होना चाहिए, न कि केवल लाभ और वर्चस्व की दौड़। उन्होंने आह्वान किया कि एआई और बिग डेटा युग में यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीकी प्रगति मानव गरिमा और स्वायत्तता से समझौता न करे तथा निर्णय लेने की सर्वोच्च शक्ति हमेशा मानव के हाथों में ही रहना चाहिए, मशीन के नहीं।

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट का सबसे बड़ा संदेश यह निकल कर सामने आया कि एआई केवल अमेरिका और यूरोप

के चंद धनाढ्य देशों अथवा बड़ी कम्पनियों का अधिकार क्षेत्र नहीं है बल्कि यह सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का एक सशक्त साधन है। शिखर सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्ण और ठोस परिणाम 21 फरवरी को 'न्यू दिल्ली डिक्लेरेशन ऑन एआई इम्पैक्ट' का सर्वसम्मति से पारित होना रहा। दुनिया के 88 देशों और कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इस घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए। पिछले 3 वैश्विक सम्मेलन मुख्यतः एआई से जुड़े संकटों और सम्भावित विनाशकारी परिणामों पर केंद्रित थे, लेकिन भारत ने इस परम्परा को बदलते हुए विमर्श के केंद्र में सुरक्षा, नवाचार और प्रभाव को रखा। भारत ने अपने पुरातन सांस्कृतिक मूल मंत्र 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' के आधार पर इस घोषणापत्र का सृजन किया। फलस्वरूप अंतरराष्ट्रीय सहमति बनी कि एआई का विकास समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन को आसान और खुशहाल बनाने के लिए होना चाहिए।

भारत ने दुनिया के सामने एआई के संचालन के लिए 3 पी सूत्र- 'पीपुल, प्लेनेट और प्रोग्रेस' प्रस्तुत किया। साथ ही 7 चक्रों की अवधारणा दी, जिसमें मानव पूंजी का निर्माण, सामाजिक सशक्तिकरण, विश्वसनीयता और सुरक्षा, ऊर्जा दक्षता, अनुसंधान को बढ़ावा, संसाधनों का लोकतंत्रीकरण और समावेशी आर्थिक विकास शामिल हैं। यह संरचना सुनिश्चित करती है कि एआई का विकास संतुलित और दूरदर्शी तरीके से हो।

भारत ने 'सॉवरेन एआई' पर जोर देते हुए स्पष्ट किया कि देश का डेटा भारत में ही सुरक्षित रहेगा। 'सर्वम एआई' जैसी स्टार्टअप्स ने भारत में विकसित बड़े भाषा मॉडल प्रस्तुत किए, जो 22 आधिकारिक भाषाओं और सैकड़ों बोलियों को समझने में सक्षम हैं। डेटा सम्प्रभुता को लेकर भारत ने यह भी स्पष्ट किया कि नागरिकों का डेटा देश के विकास के लिए उपयोग होगा, न कि केवल विदेशी कम्पनियों की ट्रेनिंग के लिए।

इस समिट के दौरान भारत को एआई ढांचे के लिए 20 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश प्रतिबद्धताएं मिलीं। बड़ी टेक कम्पनियां भारत में हरित ऊर्जा से संचालित डेटा केंद्र स्थापित करने जा रही हैं। इंडिया एआई मिशन के अंतर्गत हजारों जीपीयू स्टार्टअप्स और शोधकर्ताओं को रियायती दरों पर उपलब्ध कराए जाएंगे। एआई समिट के एक मंच पर गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई, ओपनएआई के सैम ऑल्टमैन, गूगल डीपमाइंड के डेमिस हस्साबिस, एंथ्रोपिक के डारियो एमोडेई और मेटा के यान लेकन जैसे ग्लोबल टेक महारथियों की एक साथ उपस्थिति भारतीय प्रतिभाओं पर उनके अटूट विश्वास का प्रतीक था। इन सभी ने एक स्वर में माना कि भारत के 70 करोड़ से अधिक इंटरनेट उपयोगकर्ता और दुनिया का सबसे बड़ा एआई वर्कफोर्स यानी हमारे युवा इंजीनियर एआई के भावी मेरुदंड हैं।

यान लेकन जैसे विशेषज्ञों ने भारत के डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे यूपीआई, आधार और ओएनडीसी की तर्ज पर 'ओपन सोर्स एआई' का समर्थन किया, जो भारत के दृष्टिकोण से पूरी तरह मेल खाता है। सफल एआई समाधानों को ओपन-सोर्स के रूप में निःशुल्क या कम कीमत पर साझा करने की घोषणा की गई ताकि तकनीक का लाभ गरीब देशों तक पहुंचे। भारत ने अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और एशिया के विकासशील देशों को भी एक साझा मंच प्रदान किया। किसानों के लिए एआई चैटबॉट्स, दूरदराज क्षेत्रों में स्वास्थ्य निदान के मॉडल और बच्चों के लिए एआई ट्यूटर जैसे समाधान प्रस्तुत किए गए। ये उदाहरण दिखाते हैं कि एआई का उपयोग वास्तविक जीवन की समस्याओं को हल करने में कैसे किया जा सकता है। ■■■

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
WHEELS ON YOUR WISHLIST?
Let's make it happen,
MY WISHLIST
Dream Car
New Phone
Dream Vacation
now at just 8.10%* p.a. with
TJSB Auto Finance Loan.
T&C Apply*
www.tjsb.bank.in | : 022- 48897204

# चुनौती को हल्के में न लें

## टी20 विश्व कप

प्रवीण सिन्हा

**भारतीय टीम ने पिछले टी-20 विश्व कप से लेकर इस बार टी-20 विश्व कप के ग्रुप दौर के सारे मैच जीत खूब सुर्खियां बटोरीं। कारण स्पष्ट था कि टी-20 विश्व कप में लगातार 12 मैच जीतना कोई छोटी-मोटी उपलब्धि नहीं थी, लेकिन इस विश्व कप में सुपर-8 दौर शुरू होते ही भारतीय टीम के रवैए क्रिकेट प्रेमियों के लिए अबूझ पहेली बन गई हैं।**

सुपर-8 का पहला मैच दक्षिण अफ्रीका के हाथों हारने के बाद जिम्बाब्वे को हरा टीम इंडिया ने वापसी के संकेत दिए, लेकिन जोरदार बल्लेबाजी करने के बाद भी गेंदबाजी में रणनीतिक चूक टीम के सेमीफाइनल में प्रवेश पाने की राह में अब भी रोड़ा अटकाए हुए हैं। भारतीय टीम सेमीफाइनल में भी पहुंच पाएगी या नहीं, बता पाना कठिन है। हालांकि भारतीय टीम अभी संकट की स्थिति में क्यों है, यह अवश्य बताया जा सकता है।

### भारी पड़ी रणनीतिक चूक

2024 में अजेय रहते हुए टी-20 विश्व विजेता बनी भारतीय टीम पर इस बार खिताब को स्थाई रखने का भारी दबाव है। घरेलू दर्शकों के सामने अपेक्षाओं के अनुरूप प्रदर्शन करने का दबाव सभी टीमों पर रहता है। इस दौरान भारतीय टीम ने एक मजबूत संयोजन तो तैयार कर लिया, लेकिन विश्व कप में टीम की रणनीतिक चूक भारी पड़ गई। भारतीय टीम प्रबंधन ने 8 बल्लेबाजों व ऑलराउंडरों सहित 3 विशेषज्ञ गेंदबाजों के साथ विश्व कप मुकाबलों में उतरने की रणनीति बनाई। कागज पर वास्तव में भारतीय टीम एक सशक्त दावेदार दिखाई देती है, लेकिन पिछले कुछ महीनों से विदेशी स्पिनरों (विशेषकर ऑफ स्पिनर) के सामने भारतीय बल्लेबाज संघर्ष करते दिखाई दे रहे थे, जिस पर टीम प्रबंधन ने मजबूती से काम नहीं किया था। इसके अलावा कमजोर प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध भी भारत के शीर्षस्थ बल्लेबाज फॉर्म की खोज में जूझते रहे। दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध सुपर-8 के महत्वपूर्ण मुकाबले में टीम में एक-दो परिवर्तन किया भी तो वो भारतीय टीम को कमजोर करने वाला निर्णय सिद्ध हुआ। जिम्बाब्वे के विरुद्ध अगले मैच में ओपनर संजू सैमसन और उपकप्तान अक्षर पटेल को टीम में शामिल कर टीम प्रबंधन ने सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया, लेकिन एक बड़ी जीत दर्ज कर रनरेट में सुधार करने का अवसर भारत ने गंवा दिया। यहां पर

टीम के आक्रामक रणनीति पर टिके रहने की जिद नहीं, शिवम दूबे (2 ओवर में 46 रन) जैसे अपेक्षाकृत कमजोर गेंदबाज को आक्रमण पर लगाकर जिम्बाब्वे पर बड़े अंतर से जीत दर्ज करने का अवसर गंवा दिया।

### ताकत ही बनी कमजोरी

वैसे, बल्लेबाजी आमतौर पर भारतीय टीम की ताकत मानी जाती रही है, लेकिन इस बार जसप्रीत बुमराह, अर्शदीप सिंह, हार्दिक पांड्या और मिस्ट्री स्पिनर वरूण चक्रवर्ती व अक्षर पटेल के साथ भारतीय टीम का गेंदबाजी आक्रमण ज्यादा सशक्त व संतुलित दिखाई दे रहा था। ग्रुप दौर में जहां लगातार भारतीय शीर्ष बल्लेबाज बड़ा स्कोर खड़ा करने में असफल हो रहे थे, हर अवसर पर भारतीय गेंदबाज टीम की नैया पार लगाते दिखे। इसके बावजूद भारतीय टीम प्रबंधन सहित कप्तान सूर्या में विश्व की नम्बर एक टी-20 टीम होने का दंभ लगातार दिख रहा है। जिम्बाब्वे के विरुद्ध सुपर-8 मैच में भारतीय बल्लेबाज जबरदस्त फॉर्म में दिखाई दिए और उन्होंने टी-20 विश्व कप के इतिहास का दूसरा सबसे बड़ा स्कोर (256/4) खड़ा करके बड़ी जीत का मंच तैयार कर दिया। जिम्बाब्वे की पारी में सबकुछ ठीक चल रहा था और भारतीय टीम एक निश्चित जीत की ओर बढ़ रही थी, लेकिन कप्तान सूर्या ने अचानक से शिवम दूबे को आक्रमण पर लगाने की चाल चली, जो अंततः भारी पड़ी। सूर्या ने अपने स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और हार्दिक पांड्या के एक-एक ओवर काट शिवम से दो ओवर की गेंदबाजी कराने का निर्णय किया और जिम्बाब्वे के बल्लेबाजों ने उनके 2 ओवर में 46 रन कूट कर भारतीय रनरेट के सुधार में बाधा खड़ी कर दी। शिवम एक शानदार बल्लेबाजी ऑलराउंडर हैं, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि महत्वपूर्ण मौकों पर उनकी गेंदबाजी विपक्षी टीम पर शिकंजा नहीं कस पाती है। पूरे टूर्नामेंट में शिवम ने आक्रामक बल्लेबाजी की है, लेकिन गेंदबाजी में वह बुरी तरह से असफल रहे हैं। वह हर मैच में प्रति ओवर औसतन 15-16 रन खर्च कर रहे हैं। उस स्थिति में जिम्बाब्वे के विरुद्ध बुमराह व हार्दिक का गेंदबाजी कोटा पूरा करके सूर्या 72 रन की जगह 100 रन से भी जीत दर्ज कर सकते थे।

### रन रेट के अर्थ

अब जिम्बाब्वे को हराने के बाद क्रिकेट विशेषज्ञों सहित टीम प्रबंधन ने दावे करने शुरू कर दिए कि सुपर-8 के अंतिम मुकाबले में हम वेस्ट इंडीज को हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश कर लेंगे। रन रेट की चिंता किसी को नहीं दिखी। एक तो वेस्ट इंडीज पूरे टूर्नामेंट में धुआंधार प्रदर्शन कर रही है इसलिए उसे आसानी से हराना सम्भव नहीं होगा। उसके लिए टीम इंडिया को अपनी प्रतिभा का शत-प्रतिशत प्रदर्शन करना होगा। अस्तु, सभी कह रहे हैं कि उस मैच में जो टीम बेहतर खेलेगी उसे सीधा सेमीफाइनल में प्रवेश मिल जाएगा तो रन रेट कहां अर्थ रखता है, लेकिन विजय रथ पर सवार भारतीय टीम के दंभ के सामने प्राकृतिक आपदा कभी झूकते दिखे हैं क्या? ईश्वर न करे, कभी ऐसा हो, लेकिन यदि बारिश के कारण मैच धुल गए तो वेस्ट इंडीज की टीम बेहतर रन रेट के आधार पर सेमीफाइनल में प्रवेश पा जाएगी। उस समय सूर्या को अहसास होगा कि 46 रन लुटाना कितना महंगा सिद्ध हो सकता है।

### बल्लेबाजों में लौटा विश्वास

जिम्बाब्वे के विरुद्ध मैच में भारतीय टीम के लिए सबसे बड़ी राहत की बात उसके बल्लेबाजों का फॉर्म में लौटना रहा। वैसे भी ओपनर अभिषेक शर्मा और ईशान किशन सहित तिलक वर्मा, कप्तान सूर्यकुमार यादव, शिवम दूबे, हार्दिक पांड्या, रिंकु सिंह व अक्षर पटेल जैसे धुआंधार बल्लेबाजों में किसी भी मैच का रुख पलटने का माद्दा है, लेकिन इस बार ज्यादातर मौकों पर भारतीय बल्लेबाज टुकड़ों में बेहतर प्रदर्शन करते दिखाई दिए। जिम्बाब्वे को छोड़ विश्व कप के किसी भी मैच में भारत के शीर्ष 8 में से कोई एक-दो बल्लेबाज ही अच्छी फॉर्म में दिखाई दिए। पाकिस्तान व दक्षिण अफ्रीका जैसी धुरंधर टीमों सहित नामीबिया व नीदरलैंड के सामने भी ज्यादातर भारतीय बल्लेबाज जूझते दिखाई दिए। शीर्ष 10 बल्लेबाजों की सूची में सिर्फ ईशान किशन (6 मैचों में 214 रन, पांचवां स्थान) सूर्यकुमार यादव (6 मैच, 213 रन, छठा स्थान) का शामिल हो पाना उस भारतीय टीम की दयनीय स्थिति को दर्शाता है जिसकी सबसे बड़ी ताकत उसकी बल्लेबाजी रही हो। हां, ऑलराउंडर के तौर पर हार्दिक पांड्या और शिवम दूबे बल्ले से अवश्य बेहतर प्रदर्शन करते दिखाई दे रहे हैं।

■■■

**प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सक्रिय विदेश यात्राएं और प्रमुख वैश्विक नेताओं का भारत आगमन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि भारत अब केवल क्षेत्रीय शक्ति नहीं बल्कि वैश्विक संतुलन का एक महत्वपूर्ण स्तम्भ बन चुका है।**

# फ्रांस एवं इजरायल के साथ नया मॉडल

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों का भारत दौरा और प्रधान मंत्री मोदी की 25-26 फरवरी की इजरायल यात्रा इसी व्यापक रणनीतिक पुनर्संयोजन का हिस्सा हैं। इन यात्राओं को केवल औपचारिक कूटनीतिक कार्यक्रमों के रूप में नहीं देखा जा सकता। इनके भीतर ऊर्जा संक्रमण, रक्षा सहयोग, प्रौद्योगिकी साझेदारी और वैश्विक दक्षिण के लिए एक नए विकास मॉडल की संरचना छिपी है।

भारत और फ्रांस के रिश्तों ने नई ऊंचाइयों को छू लिया है। प्रधान मंत्री मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों की संयुक्त प्रेस वार्ता में यह ऐतिहासिक घोषणा की गई कि दोनों देश मिलकर माउंट एवरेस्ट की ऊंचाइयों तक उड़ान भरने वाला विश्व का एकमात्र हेलीकॉप्टर भारत में बनाएंगे और उसे दुनियाभर में निर्यात करेंगे। कर्नाटक में टाटा समूह और एयरबस के संयुक्त उद्यम के अंतर्गत एच-125 हेलीकॉप्टर की असेंबली लाइन का वर्चुअल उद्घाटन किया गया, जिसे भारत की सामरिक आवश्यकताओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण माना जा रहा है। यह हेलीकॉप्टर हिमालयी क्षेत्रों में निगरानी, रसद आपूर्ति और सुरक्षा अभियानों को नई मजबूती देगा।

मुम्बई में आयोजित उच्चस्तरीय बैठक में दोनों देशों के बीच 20 महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर हुए। इनमें बीईएल और फ्रांसीसी कम्पनी सैफ्रों के बीच हैमर मिसाइल निर्माण का समझौता भी शामिल है। भारत-फ्रांस सम्बंधों को अब विशेष वैश्विक रणनीतिक साझेदारी का दर्जा दिया गया है जो रक्षा, एयरोस्पेस, उभरती प्रौद्योगिकियों, स्वच्छ ऊर्जा और समुद्री सहयोग जैसे क्षेत्रों में गहरे सहयोग का संकेत है। निश्चित ही वर्तमान वैश्विक अनिश्चितताओं के दौर में भारत और फ्रांस का सहयोग वैश्विक स्थिरता की सशक्त धुरी बन रहा है। फ्रांस की विशेषज्ञता और भारत के विशाल बाजार का यह संगम न केवल रक्षा उत्पादन को बढ़ावा देगा बल्कि भारत को उच्च प्रौद्योगिकी निर्माण के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में निर्णायक कदम सिद्ध होगा। लगभग एक हजार करोड़ रुपये के निवेश वाली यह परियोजना रोजगार सृजन और आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्य को भी गति देगी।

ललित गर्ग

भारत और फ्रांस के बीच 1998 से रणनीतिक साझेदारी है, जो समय के साथ बहुआयामी सहयोग में विकसित हो चुकी है। हालिया वार्ताओं में रक्षा, अंतरिक्ष, समुद्री सुरक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, परमाणु ऊर्जा और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में ठोस सहमति बनी है। 26 राफेल-एम लड़ाकू विमानों की खरीद का निर्णय दोनों देशों के बीच गहरे विश्वास और दीर्घकालिक रक्षा सहयोग का संकेत है। हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संयुक्त नौसैनिक अभ्यास और समुद्री सुरक्षा पर सहयोग भारत की सामरिक स्थिति को सुदृढ़ करता है तथा यूरोप और एशिया के बीच एक

रणनीतिक सेतु निर्मित करता है। ऊर्जा संक्रमण और जलवायु सहयोग इन सम्बंधों का नया और अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम बनकर उभरा है। भारत 2070 तक नेट-जीरो लक्ष्य की दिशा में अग्रसर है, जबकि फ्रांस 2050 तक कार्बन-तटस्थता का लक्ष्य लेकर चल रहा है। हरित हाइड्रोजन, सौर ऊर्जा, सतत विमान ईंधन और स्वच्छ ऊर्जा निवेश पर सहमति इस दिशा में निर्णायक कदम है। दोनों देश इंटरनेशनल सोलर एलायंस के सह-संस्थापक हैं और इसके माध्यम से 120 से अधिक देशों को सौर ऊर्जा निवेश से जोड़ने का प्रयास हो रहा है। हरित हाइड्रोजन उत्पादन, इलेक्ट्रोलाइजर निर्माण और ऊर्जा ग्रिड आधुनिकीकरण में संयुक्त निवेश की सम्भावनाएं भारत के ऊर्जा सुरक्षा ढांचे को सुदृढ़ कर सकती हैं। फ्रांसीसी विकास एजेंसियों द्वारा भारत में अक्षय ऊर्जा और शहरी हरित अवसंरचना में बड़े निवेश प्रस्तावित हैं, जो यदि समयबद्ध क्रियान्वयन में परिवर्तित होते हैं तो ऊर्जा संक्रमण को आर्थिक आधार प्रदान करेंगे।

इसी प्रकार भारत और इजरायल के सम्बंध भी पिछले दशक में उल्लेखनीय रूप से प्रगाढ़ हुए हैं। प्रधान मंत्री मोदी की 25-26 फरवरी की इजरायल यात्रा बहुत विशेष बन रही है। प्रधान मंत्री मोदी की इस यात्रा के दौरान दोनों पक्ष एक सुरक्षा समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसके अंतर्गत भारतीय और इजरायली रक्षा उद्योग तकनीक शेयर करने को पूरी तरह से गोपनीय रखेंगे। दोनों देश भारत में संयुक्त रूप से हथियार प्रणालियों का विकास करेंगे। दोनों पक्ष वैश्विक और क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक सहयोग को गहरा करके अपनी द्विपक्षीय साझेदारी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने के लिए तैयार हैं। इस दौरे में 10 बिलियन डॉलर की बड़ी रक्षा डील सम्भव है। विशेषतौर पर आयरन डोम सुरक्षा कवच देने को लेकर इजरायल से डील हो सकती है। भारत इजरायल के बीच बैलिस्टिक मिसाइल शील्ड, लेजर हथियार, ड्रोन और लम्बी दूरी की स्टैंड-ऑफ मिसाइलों को लेकर डील हो सकती है। वहीं, डेविड्स स्लिंग और एरो जैसे एडवांस सिस्टम पर भी सहयोग बढ़ सकता है।

इजरायली प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का भारतीय प्रधान मंत्री का जोर-शोर से स्वागत ये बताता है कि खाड़ी और मध्य-पूर्व में भारत की भूमिका काफी बड़ी हो गई है। भारत अपने मित्रों का दायरा बढ़ा रहा है और साथ ही साथ अपना दम भी दिखा रहा है। नए होने वाले समझौतों में संयुक्त रक्षा उत्पादन, उन्नत ड्रोन तकनीक और साइबर सुरक्षा सहयोग शामिल हो सकते हैं, जो मेक इन इंडिया पहल को भी गति देंगे। हरित ऊर्जा और नवाचार के क्षेत्र में भी इजरायल के साथ सहयोग की व्यापक सम्भावनाएं हैं। ■■■


**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक**

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

**पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित**
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

**हम संघ में क्यों हैं...**

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

**Bank Details :** State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

# विकृत मानसिकता बिखरते परिवार

**क्यों मुरझा रहे हैं रिश्तों के फूल? अब न रिश्तों में वो मिठास है, न आत्मीयता और न ही भावना। माता-पिता अपने बच्चों को माली बनकर पल्लिवत व पुष्पित करते हैं, लेकिन वहीं संतान जब माता-पिता की जान के प्यासे हो जाए तो मानवता ही निशब्द हो जाती है।**

स्मार्ट फोन युग के वर्तमान आधुनिक परिवेश में मानवीय हृदय व समाज को झकझोर देने वाली ऐसी घटनाएं घटित हो रही हैं जिससे मन पीड़ा से भर उठता है। हिंदू धर्म में परिवार व्यवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारे ग्रंथ और संत माता-पिता को ईश्वर के समकक्ष रखते हैं। इसी समाज में विकृत घटनाएं घट रही हैं, जिनको देखकर प्रश्न खड़ा हो जाता है कि आजकल के युवा छोटी-छोटी बातों पर इतना हिंसक क्यों हो रहे हैं? इतना क्रोध कि पिता-माता तक की हत्या करने में संकोच नहीं? सम्पन्न और सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित परिवारों में भी ऐसी घटनाएं हो रही हैं तो यह एक सामाजिक विमर्श का विषय बन जाता है।

मृत्युंजय दीक्षित

विकृत मानसिकता वाली आपराधिक घटनाओं में राजधानी लखनऊ के आशियाना निवासी शराब कारोबारी पिता मानवेंद्र सिंह की उनके पुत्र अक्षत प्रताप सिंह ने गोली मारकर हत्या कर दी। मानवेंद्र सालेह नगर व बुद्धेश्वर में वर्धमान नाम से पैथोलाजी भी चलाते थे। पिता की हत्या के आरोपी बेटे अक्षत ने पिता के शव के चार टुकड़े किए थे। अक्षत ने पेट और पीठ भी काटकर अलग करने का प्रयास किया था। इस घटना का वास्तविक कारण जांच के बाद ही सामने आएगा, किंतु अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार पिता मानवेंद्र ने अपने बेटे से नीट की तैयारी करने को कहा था और उसी बात को लेकर कहा-सुनी के मध्य पिता मानवेंद्र ने अपनी पिस्टल निकाल ली थी। यह भी हो सकता है कि पिस्टल की छीना झपटी में गोली चल गई हो, किंतु शव के टुकड़े-टुकड़े करने की बात पर वह चुप्पी साध रहा है और इस प्रकरण

में अक्षत की बहन की भूमिका की भी जांच की जा रही है, जिससे अभी और तथ्य भी सामने आ सकते हैं।

स्थानीय लोगों ने बताया कि पार्क में रामलीला का आयोजन किया जाता था। इसमें मानवेंद्र बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। रामलीला में अक्षत मेघनाद का अभिनय करता था। रामलीला के दौरान वह बच्चों से घुल-मिल जाता था, हालांकि बाद में उसका व्यवहार बदल गया था और उसने मोहल्ले वालों से दूरी बना ली थी। मानवेंद्र अपने बेटे से सभी पैथोलॉजी सेंटर का संचालन कराना चाहते थे और इसके लिए वह अपने बेटे को 27 हजार रुपए भी देते थे, किंतु अक्षत की इसमें रुचि नहीं थी इसलिए पिता और पुत्र में कहासुनी हुई जो इतनी जघन्य घटना में बदल गई।

ऐसी ही एक और घटना उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुई जहां रोक-टोक करने पर दो बेटियों ने अपने पिता की नृशंस हत्या कर दी। रात में परिवार के सभी सदस्यों को नींद की गोलियां खिलाकर बेहोश करने के बाद सब्जी काटने वाले चाकू से पिता की गर्दन और पेट में वार किए। दोनों बेटियों ने गिरफ्तार हो जाने के बाद बताया कि उनकी विवाह की आयु निकल रही थी और वह बार-बार टोकते थे। जिससे परेशान होकर उन्होंने यह कदम उठा लिया।

इस प्रकार की घटनाएं चिंतनीय हैं, वह भी उस समाज में जहां परिवार को इतना महत्व दिया गया है। इसका बड़ा कारण सोशल मीडिया और मोबाइल गेम के कारण युवाओं का भावनात्मक व बौद्धिक रूप से कमजोर होना है। बच्चे दबाव सहन नहीं कर पा रहे हैं और छोटी-छोटी बातों पर तनाव में आकर ऐसे कदम उठा रहे हैं। जैसे ही उन पर परीक्षा या प्रदर्शन का दबाव पड़ता है या फिर उनकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य होता है तो वह स्वयं पर नियंत्रण नहीं रख पाते। आपसी रिश्तों में मिठास समाप्त होती जा रही है जिसके कारण भी तनाव बढ़ रहा है।

शराब कारोबारी की हत्याकांड में एक महत्वपूर्ण तथ्य यह उभरकर सामने आ रहा है कि जब अभिभावक अपनी इच्छाओं को बच्चों पर अपनी मर्जी जबरदस्ती थोपने लगते हैं तब बच्चों में विरोध की चिंगारी पनपने लगती है, लेकिन यह विरोध इतनी बड़ी घटना में बदल जाए कि मानवता ही शर्मशार हो जाए। यह घटनाएं आपसी रिश्तों में कमजोरी के साथ ही युवाओं में धैर्य की कमी होने का भी संकेत हैं। आज अभिभावकों के पास अपने बच्चों के साथ बैठकर संवाद करने का पर्याप्त समय नहीं रह गया है, इस कारण भी रिश्तों में दरार आ रही है।

■■■


**आपकी आवाज को बुलंद करने वाली**
**सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका**

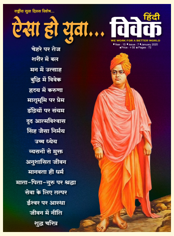

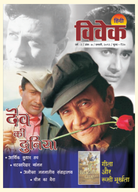

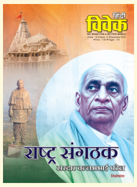

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

**सदस्यता शुल्क**

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

**खुद ग्राहक बनें व बनाएं**

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

**हिंदी विवेक कार्यालय**
प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067
सम्पर्क : +91 95949 91884
hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

**डिजिटल पत्रकारिता का चलन तेजी से बढ़ रहा है। एक ओर समाचारों और कंटेंट को इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रसारित किया जाता है, वहीं इसका गहन विश्लेषण भी किया जाता है। डिजिटल पत्रकार कमेंट सेक्शन के माध्यम से अपने पाठकों/दर्शकों के साथ दोतरफा संवाद स्थापित करते हैं।**

# डिजिटल पत्रकारिता चमक और चुनौती

**मीनाक्षी दीक्षित**

भारत में डिजिटल पत्रकारिता की शुरुआत 1990 के दशक से मानी जा सकती है। वर्ष 1995 में दक्षिण भारत के प्रमुख समाचार पत्र 'द हिंदू' ने अपना इंटरनेट संस्करण जारी किया। 8 अप्रैल 1996 को 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ने अपना वेबसाइट शुरू किया। 'हिंदुस्तान टाइम्स' ने भी 14 अगस्त 1996 को अपना इंटरनेट संस्करण शुरू कर दिया। वर्ष 1999 में मध्य प्रदेश के इंदौर से प्रकाशित समाचार पत्र 'नई दुनिया' ने क्रांतिकारी पहल करते हुए हिंदी भाषा का पहला समाचार वेबसाइट 'वेब दुनिया' नाम से शुरू किया। वर्तमान समय में लगभग सभी हिंदी समाचारपत्रों और समाचार चैनल्स की समाचार वेबसाइट्स हैं। अनेक समाचार संस्थान ऐसे भी उभरकर सामने आए हैं, जो केवल वेबसाइट के माध्यम से ही पाठकों को समाचार उपलब्ध करा रहे हैं। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने समाचारों के परम्परागत माध्यम (रेडियो, टेलीविजन और मुद्रित) से इतर ऑनलाइन यानी कि इंटरनेट पर उपलब्ध करा दिया है। इससे विभिन्न वेबसाईटों के माध्यम से सूचना और समाचार ऑनलाइन प्राप्त होने लगे हैं। अब तो समाचार वेबसाइटों की संख्या हर दिन बढ़ रही है।

भारत में 20 लाख से अधिक यूट्यूब चैनल, यूट्यूब पार्टनर प्रोग्राम का हिस्सा हैं और 41 हजार से अधिक ऐसे चैनल हैं जिनके 1 लाख से अधिक ग्राहक हैं। इनमें से प्रमुख समाचार चैनलों के अलावा एक बड़ी संख्या स्वतंत्र डिजिटल न्यूज क्रिएटर्स की है। अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स को भी डिजिटल पत्रकारिता के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। एआई के बढ़ते अनुप्रयोगों ने भारत की लगभग सभी भाषाओं में डिजिटल पत्रकारिता को बढ़ावा दिया है।

आज की डिजिटल पत्रकारिता, जिसे ऑनलाइन या नेटिजन पत्रकारिता भी कहा जाता है, समाचारों को इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से प्रसारित करने का एक सरल प्रारूप है। यह वेबसाइटों, सोशल मीडिया, ऐप्स और वीडियो के माध्यम से तीव्र गति या कहें कि तत्काल ही समाचार, आंकड़ों का विश्लेषण और मल्टीमीडिया कंटेंट उपलब्ध करा देती है, यह आज की जीवन शैली के लिए पारम्परिक मीडिया की तुलना में कहीं अधिक अनुकूल है। इसका दूसरा पक्ष ये भी है कि यदि किसी के पास सूचना और इंटरनेट वाला स्मार्ट फोन है तो वो डिजिटल पत्रकारिता कर सकता है, कंटेंट प्रभावशाली हो तो समाचार प्रसारण में स्थान बना सकता है। डिजिटल पत्रकारिता ने पत्रकारिता का आकाश सभी के लिए खोल दिया है। डिजिटल पत्रकार बनने के लिए बड़े संस्थान का नाम नहीं चाहिए- बस काम का कौशल और समाचार का सामर्थ्य ही पर्याप्त है।

गति डिजिटल पत्रकारिता की बड़ी शक्ति है, समाचार वास्तविक समय में प्रकशित हो जाता है और वास्तविक समय

में अपडेट किया जा सकता है। यह न तो 24 घंटे के समाचार चक्र में बंधी है और न ही समाचारपत्र की तरह किसी प्रकार की भौतिक सीमाओं से। डिजिटल पत्रकारिता दर्शकों को पसंद आने वाले किसी भी प्रारूप को अपना सकती है जैसे वीडियो व्याख्यात्मक लेख, सूचियां, आंकड़ों के विश्लेषण पर आधारित कहानियां और छोटे-छोटे सोशल मीडिया पर साझा किए जा सकने वीडियों क्लिप। डिजिटल पत्रकारिता का प्रसार माध्यम प्रिंटिंग प्रेस या ब्रॉडकास्ट टावर नहीं बल्कि इंटरनेट आधारित स्पेस और सोशल मीडिया है।

डिजिटल पत्रकार कमेंट सेक्शन के माध्यम से अपने पाठकों/दर्शकों के साथ दोतरफा संवाद स्थापित करते हैं, जिससे उनको समुदाय की भावना समझने का अवसर वास्तविक समय में ही मिल जाता है और वो उनके पक्ष को भी अपने कंटेंट का हिस्सा बना सकते हैं, जिससे उनके पाठक/दर्शक उनके साथ व्यक्तिगत जुड़ाव अनुभव करते हैं। किसी भी प्रकार की सीमाएं न होने के कारण डिजिटल पत्रकार विषय की गहराई में जाने को स्वतंत्र होते हैं, निष्पक्षता से किसी भी मुद्दे के पक्ष और विपक्ष का विश्लेषण कर सकते हैं।

ये सभी बिंदु डिजिटल पत्रकारिता को आज के समय की पत्रकारिता का सबसे चमकदार स्वरूप बनाते हैं जो न केवल किसी के भी पत्रकार बनने के सपने को पूरा कर सकता है वरन पाठकों/दर्शकों तक निष्पक्ष, विस्तृत और शोधपरक सामग्री वास्तविक समय पर पहुंचा देती है वो भी सीधे उनके हाथ में पकड़े हुए मोबाइल में।

डिजिटल पत्रकारिता, पत्रकारों और दर्शकों के लिए उतनी ही चुनौतियां भी लेकर आती है, जितने अवसर लाती है। वेबसाइट और चैनल्स की भारी भीड़ में जगह बनाना सरल नहीं होता। पत्रकार इस प्रतिद्वंद्विता में तभी बने रह सकते हैं जब वो लगातार गुणवत्ता पूर्ण समाचार और कंटेंट दे सकें। अपना कंटेंट आगे बढ़ाने और अल्गोरिदम में ऊपर आने के लिए पत्रकारों को कई बार डिजिटल मार्केटिंग एजेंसियों की सहायता लेनी पड़ती है।

विश्वसनीयता का संकट डिजिटल पत्रकारिता की प्रमुख चुनौतियों में से एक है। गलत सूचनाएं और फर्जी समाचार सोशल मीडिया पर तेजी से फैल जाती हैं जो डिजिटल मीडिया की विश्वनीयता नहीं स्थापित होने देतीं। पाठकों के लिए तथ्य और कूट रचित तथ्य में अंतर करना कठिन हो गया है। डिजिटल पत्रकारिता, डिजिटल पत्रकारों के लिए पत्रकारिता के किसी भी स्वरुप की तरह चुनौतियों और अवसरों के दो पहलुओं वाला सिक्का है और डिजिटल पाठकों/दर्शकों के लिए समाचारों से जुड़े रहने का मुट्ठी में बंद सरल और सशक्त माध्यम। ■■■

50+ YEARS OF MOMENTUM
अर्थ
सहकारेण
कल्याणम्
दि कल्याण जनता
सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
सोने
तारण
कर्ज
जलद कर्ज
कमी प्रक्रिया
शुल्क
व्याजदर
९.५०%* वार्षिक
* अटी व शर्ती लागू
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.in
KJSBank

# संघ यात्रा को रेखांकित करती शतक

**राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना, इतिहास व 100 वर्षों की यात्रा को जानना है तो प्रत्येक भारतीय को फिल्म 'शतक' अवश्य देखनी चाहिए। 'शतक' की विशेषता ये है कि ये एआई के उपयोग से बनी हुई फिल्म है।**

## फिल्म समीक्षा

विश्व का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इस वर्ष अपनी स्थापना का 100वां वर्ष पूर्ण कर रहा है। ऐसे समय में भारतीय सिनेमा को भी संघ की याद आई है और निर्माता वीर कपूर के साथ निर्देशक आशीष मल्ल संघ के 100 वर्षों की यात्रा को रेखांकित करती फिल्म 'शतक' दर्शकों के लिए लेकर आए हैं। 'शतक' की विशेषता ये है कि ये एआई के उपयोग से बनी हुई फिल्म है। संघ के निर्माण की पृष्ठभूमि, डॉ. हेडगेवार जी की सोच के साथ, श्रीगुरूजी द्वारा संघ के विस्तार और वर्तमान स्वरुप तक पहुंचने की यात्रा का नाम है 'शतक'। 'शतक' संघ स्थापना से पहले डॉ. हेडगेवार जी द्वारा स्वतंत्रता आंदोलन में कांग्रेस के कार्यकर्ता के नाते किए गए कार्यों का उल्लेख भी करती है और उन कारणों पर भी प्रकाश डालती है जिनके कारण डॉ. साहब को कांग्रेस छोड़नी पड़ी और संघ का निर्माण करना पड़ा। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में फैलाए गए इस झूठ का कि संघ का देश की स्वतंत्रता में कोई योगदान नहीं है, इस झूठ का भी पर्दाफाश करती है। 'शतक' ना केवल संघ के बारे में फैलाए अनेक दुष्प्रचारों के उत्तर दर्शकों को देने का प्रयास करती है अपितु डॉ. साहेब के बाल्यकाल से देश के बारे में उनके विचारों से अवगत कराने का काम भी करती है। उनके जीवन और देश की बदलती सामाजिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों का चित्रण फिल्म में किया गया है। क्यों डॉ. साहब का कांग्रेस से नाता टूटा, संघ की स्थापना उन्होंने की, राष्ट्रसेविका समिति की स्थापना, महात्मा गांधी का संघ के कार्यों की सराहना करना, जैसे अनेक प्रसंग संघ के विचारों और कार्य करने के तरीकों को दिखाने का काम करते हैं। कहानी डॉ. साहेब के बाद श्रीगुरूजी के हाथ में संघ प्रमुख दायित्व आने के साथ विस्तार लेती है और इसी कालखंड में हुए कलकत्ता में जिन्ना द्वारा डॉयरेक्ट एक्शन डे में मुसलमानों द्वारा हजारों हिंदुओं के कत्लेआम को भी दिखाया गया है।

अतुल गंगवार

संघ एक व्यापक विषय है। एक फिल्म की अवधि में उसको सहेजना आसान काम नहीं हैं। 'शतक' भी संघ का 50 प्रतिशत ही इतिहास दिखाने में सक्षम हुई है। अधिक से अधिक घटनाओं को दिखाने के चक्कर में फिल्म की गति तेज हुई है, जिससे कई बार दर्शक फिल्म से कटा हुआ अनुभव करता है। गायक सुखविंदर का गाया गीत जय जय हिंदुस्तान, भगवा है अपनी पहचान, प्रभावी बन पड़ा है। संवाद कई जगह बड़े प्रभावी बन पड़े हैं। 'शतक' में इसके सीक्वल की पूरी सम्भावनाएं हैं। 'शतक' एक ऐसी फिल्म है जिसे हर भारतीय को देखना चाहिए। देश के इतिहास को किस तरह से प्रस्तुत किया है, ये हर भारतीय को जानना चाहिए। कुल मिलाकर 'शतक' संघ के शताब्दी वर्ष में प्रस्तुत एक उल्लेखनीय कागजात है, जो आने वाली पीढ़ियों को संघ कार्य के बारे में जानकारी देने का काम करेगी। जो लोग संघ को नहीं जानते, लेकिन जानना चाहते हैं, उन्हें तो ये फिल्म अवश्य देखनी चाहिए। अच्छा होगा संघ के स्वयंसेवक नए लोगों को अधिक से अधिक प्रेरित करें ये फिल्म देखने के लिए। इतने कम समय (1 घंटा 52 मिनट) में संघ के 100 वर्ष की यात्रा दिखाना असम्भव है, आशा है जल्दी ही हमें संघ की पूर्ण यात्रा देखने को मिलेगी। ■■■

धरती पर जीवन की निरंतरता किसी एक प्रजाति की उपलब्धि नहीं बल्कि असंख्य जीवों, वनस्पतियों, सूक्ष्म जीवों और प्राकृतिक तंत्रों के बीच स्थापित संतुलन का परिणाम है। मनुष्य स्वयं को इस ग्रह का सबसे विकसित जीव मानता है, परंतु उसकी यह श्रेष्ठता प्रकृति से अलग होकर नहीं, उसी के सहारे सम्भव हुई है। 3 मार्च को मनाया जाने वाला 'विश्व वन्यजीव दिवस' केवल एक प्रतीकात्मक अवसर नहीं, यह उस सत्य का स्मरण है कि यदि जैव विविधता कमजोर होती है तो मानव सभ्यता की नींव भी डगमगाने लगती है। जंगल, नदियां, वन्यजीव और पौधे पृथ्वी की जीवन-रेखा हैं। यह केवल प्राकृतिक सौंदर्य का हिस्सा नहीं, ये जलवायु संतुलन, खाद्य सुरक्षा, जल संरक्षण और पारिस्थितिक स्थिरता के आधार स्तम्भ हैं।

सोनम लववंशी

**यदि हम आज वन्यजीवों और पौधों की रक्षा नहीं करते तो आने वाली पीढ़ियां केवल पुस्तकों में इनका अस्तित्व देखेंगी। विश्व वन्यजीव दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी नहीं बल्कि उसका मात्र एक हिस्सा है।**

जैव विविधता का महत्व इस तथ्य से समझा जा सकता है कि प्रत्येक जीव, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, पारिस्थितिकी तंत्र में एक विशिष्ट भूमिका निभाता है। मधुमक्खियां और तितलियां परागण के माध्यम से खाद्य उत्पादन को सम्भव बनाती हैं। विश्व की लगभग 75 प्रतिशत खाद्य फसलें किसी न किसी रूप में परागणकर्ताओं पर निर्भर हैं। यदि इनकी संख्या में गिरावट आती है तो इसका सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन और खाद्य सुरक्षा पर पड़ेगा। इसी प्रकार जंगलों में रहने वाले शिकारी जीव शिकार प्रजातियों की संख्या को नियंत्रित रखते हैं, जिससे पारिस्थितिक संतुलन बना रहता है। यदि शीर्ष शिकारी समाप्त हो जाएं तो पूरी खाद्य श्रृंखला असंतुलित हो सकती हैं, जिसका परिणाम पर्यावरणीय और आर्थिक दोनों रूपों में विनाशकारी होता है। भारत इस संदर्भ में विशेष महत्व रखता है।

भारत विश्व के कुल भूभाग का केवल 2.4 प्रतिशत हिस्सा रखता है, लेकिन यहां

# जैव विविधता
## पृथ्वी के जीवन का आधार

विश्व की लगभग 8 प्रतिशत जैव विविधता पाई जाती है। यह विविधता भारत को जैविक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध बनाती है। फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की भारत राज्य वन रिपोर्ट 2023 के अनुसार देश का कुल वन और वृक्ष आच्छादन लगभग 24.62 प्रतिशत है। पहली दृष्टि में यह आंकड़ा संतोषजनक लगता है, लेकिन वास्तविक चुनौती केवल वन क्षेत्र बढ़ाने की नहीं बल्कि उनकी गुणवत्ता और जैव विविधता को बनाए रखने की है। प्राकृतिक घने वन, जहां विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां और जीव सह-अस्तित्व में रहते हैं, पारिस्थितिकी के लिए अधिक महत्वपूर्ण होते हैं, जबकि एकरूप वृक्षारोपण जैव विविधता को वह समर्थन नहीं दे पाता।

वन केवल पेड़ों का समूह नहीं, पृथ्वी के फेफड़े हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों के अनुसार विश्व के वन प्रत्येक वर्ष लगभग 2.6 अरब टन कार्बन डाइऑक्साइड अवशोषित करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन की गति धीमी होती है। वन वर्षा चक्र को नियंत्रित करते हैं, मिट्टी के कटाव को रोकते हैं और जल स्रोतों को संरक्षित रखते हैं। यदि वन समाप्त होते हैं तो इसका प्रभाव केवल पर्यावरण तक सीमित नहीं रहता, यह कृषि उत्पादन, पेयजल उपलब्धता और मानव स्वास्थ्य पर भी पड़ता है।

हाल के वर्षों में बढ़ती हीटवेव, अनियमित मानसून और सूखे की घटनाएं इस असंतुलन की स्पष्ट चेतावनी हैं। भारत में बाघ संरक्षण इसका एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है। नेशनल टाइगर कंजर्वेशन अथॉरिटी के अनुसार 2022 में देश में 3167 बाघ दर्ज किए गए, जो विश्व की कुल बाघ जनसंख्या का लगभग 75 प्रतिशत है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि यदि वैज्ञानिक नीति, सख्त कानून और स्थानीय समुदायों की भागीदारी को साथ लाया जाए तो संरक्षण सम्भव है। इसके साथ ही मानव-वन्यजीव संघर्ष की बढ़ती घटनाएं यह भी दर्शाती हैं कि विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बनाना अत्यंत आवश्यक है।

जैव विविधता का संकट केवल पर्यावरणीय संकट नहीं, यह आर्थिक संकट भी है। पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं, जैसे जल संरक्षण, मिट्टी की उर्वरता, परागण और औषधीय संसाधन, वैश्विक अर्थव्यवस्था की अदृश्य नींव हैं। विश्व की लगभग 50 प्रतिशत से अधिक अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति पर निर्भर है। यदि यह आधार कमजोर होता है तो आर्थिक स्थिरता भी संकट में पड़ जाती है। कोविड-19 महामारी ने भी यह स्पष्ट किया कि जब मनुष्य प्रकृति के संतुलन को बिगाड़ता है तो उसके परिणाम वैश्विक संकट के रूप में सामने आ सकते हैं। वन्यजीव संरक्षण का एक महत्वपूर्ण पहलू स्थानीय समुदायों की भूमिका भी है। आदिवासी और ग्रामीण समुदाय सदियों से प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीते आए हैं। उनके पारम्परिक ज्ञान और जीवनशैली में संरक्षण की भावना निहित होती है। यदि संरक्षण नीतियों में इन समुदायों को भागीदार बनाया जाए तो यह प्रयास अधिक प्रभावी और स्थाई हो सकता है। संरक्षण केवल कानूनों और नीतियों से नहीं बल्कि सामाजिक चेतना और सामूहिक जिम्मेदारी से सम्भव है। आज आवश्यकता केवल संरक्षण कार्यक्रमों की नहीं, सोच में परिवर्तन की है। विकास का अर्थ केवल सड़कें, भवन और उद्योग नहीं होना चाहिए बल्कि वह विकास जो प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखे। सतत विकास वही है, जो वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों को सुरक्षित रखे। 'विश्व वन्यजीव दिवस' हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हमारी जीवनशैली, हमारे निर्णय और हमारी नीतियां किस प्रकार इस ग्रह के भविष्य को प्रभावित कर रही हैं। वन्यजीवों और पौधों का संरक्षण करुणा का विषय भर नहीं, यह मानव अस्तित्व की अनिवार्यता है। यदि जैव विविधता सुरक्षित रहती है तो पृथ्वी पर जीवन का संतुलन बना रहेगा, लेकिन यदि यह संतुलन टूटता है तो विकास, समृद्धि और प्रगति के सभी दावे अर्थहीन हो जाएंगे। इसलिए वन्यजीव संरक्षण कोई विकल्प नहीं, यह पृथ्वी और मानवता के भविष्य को सुरक्षित रखने की अनिवार्य शर्त है।

■■■

# पुण्यतिथि पर वीर सावरकर को दी गई श्रद्धांजलि

स्वातंत्र्यवीर सावरकर उद्यान समिति एवं पोईसर जिमखाना द्वारा आयोजित कार्यक्रम में स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर की पुण्यतिथि मनाई गई। इस अवसर पर उत्तर मुम्बई के पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी ने स्वातंत्र्यवीर सावरकर उद्यान, बोरीवली (पश्चिम) में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस कार्यक्रम में नितिन प्रधान, श्रीधर साठे, मुकेश भंडारी, करूणाकर शेट्टी और नगरसेविका व मंडल वार्ड के सभी पदाधिकारी उपस्थित थे।

# विश्वविद्यालय परिसर में हिंसा अशोभनीय है- विनोद बंसल

विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता विनोद बंसल ने विश्वविद्यालय परिसर में हिंसा को लेकर अपना आक्रोश जताया है। इनका कहना है कि वे जो विरोध के नाम पर विश्वविद्यालय परिसर में हिंसा करते हों, सुरक्षा बलों पर बैनर, डंडे और जूते फेंकते हों, पुलिसकर्मियों से ना सिर्फ धक्का-मुक्की अपितु उन्हें दांतों से काटते हों, कुलगुरु के विरुद्ध अशोभनीय और अशिष्ट भाषा का प्रयोग करते हों तथा परिसर के अंदर और बाहर भी राजधानी का वातावरण खराब करने का प्रयास करते हों, क्या उन्हें छात्र कहा जा सकता है?

क्या ऐसे लोग संगठित रूप से षडयंत्रपूर्वक शिक्षा के मंदिर को अपवित्र कर उसे बदनाम नहीं कर रहे? जो विद्यार्थी पढ़ने वाले हैं, क्या ये तत्व उनके मन मस्तिष्क में नकारात्मक हिंसक और देश विरोधी जहर नहीं भर रहे? जो कुलगुरु का अपमान करते हों, क्या ऐसे कुलघातियों को गुरुकुल में रहने का अधिकार होना चाहिए? घटना गम्भीर है और निकृष्ट राजनैतिक उद्देश्य से विश्व के इस प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान की छवि को खराब करने वाले ऐसे कथित छात्रों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही भी बहुत आवश्यक है।

# मनपा विधि समिति के सदस्य बने तेजिंदर सिंग तिवाना

बृहन्मुंबई महानगरपालिका के विधि समिति के सदस्य के रूप में तेजिंदर सिंग तिवाना का चयन किया गया है। उनके शुभचिंतकों ने खुशी जताते हुए चयनित होने पर उनका अभिनंदन किया है और विश्वास जताया है कि उनके नेतृत्व के गुण और समाजसेवा की भावना मुम्बई के विकास को एक नई दिशा प्रदान करेगी।

पितांबरी
फूडकेअर डिवीजन
इस होली पर,
रंगों के साथ करें
बौछार
असली मिठास की !
रुचियाना गुड़ पाउडर
Pitambari
Ruchiyana
The Rich Taste!
Jaggery Powder
500 g
Hygienically Produced
Sweet & Delicious
Scan me to watch Jaggery recipes
रुचियाना गुळ पावडर
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599, South: 6366932555,
East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 6703 5564 / 5699, Toll Free: 18001031299.
Visit: www.pitambari.com | CIN: U52291MH1989PTC051314